हुक्म या कार्यवाही मय इनीशियल जज	नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुक्म की तारीख में जारी हुए
3/11/2014 पत्रावली पेश हुई। वकील वादी व स्वयं वादी सायंकाल तक बार-बार आवाज लगवाने के बावजूद हाजिर नहीं। अतः पत्रावली को अदम हाजिरी व अदम पैरवी में खारिज किया जाता है। पत्रावली फैसल शुमार होकर नत्थी से मय हो। दाखिल दफ्तर हो। निर्णय खुले न्यायालय में सुनाया गया। (हस्ताक्षर)	